श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ७

दिसम्बर - २०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. परमात्मा तीर्थंकरों के कल्याणको में महोत्सवादि करने का आचार ..... देवों का हैं ।
२. ..... याने जीव के उत्पन्न होने का स्थान ।
३. त्रिशला रानी ने नौवें स्वप्न में ..... को देखा ।
४. संवर तत्व का ..... आत्मा को विकास करने से अटकाता है ।
५. मुर्गे के भव में पुण्ययोग से ..... एवं मुनिवाणी का योग प्राप्त हुआ ।
६. अनादि काल से विषय वासना के ..... आत्मा में पडे हुए हैं ।
७. एक मात्र धर्म ही शरण देने में समर्थ है उसका चिंतन जीव को ..... दिलाने में समर्थ बनता है ।
८. पापवाले ..... का त्याग करता हूँ ।
९. ..... से बडा धर्म इस पृथ्वी तल पर नहीं ।
१०. ..... चारित्र वर्तमान में बडी दीक्षा के समय उच्चराया जाता है ।
११. इन्द्र भी जिन्हें पूजते हैं ऐसा ..... अरहंतपना यह सब धर्मरुप कल्पवृक्ष के फल है ।
१२. जहाँ लज्जा है वहाँ ..... का पालन होता है ।
१३. आत्मा के साथ जुडे कर्मो को अलग करना वह ..... है ।
१४. जीवन में धर्मरत्न को पाने के लिये ..... का प्रगटीकरण अत्यंत आवश्यक है ।
१५. किसी भी प्रकार का परिग्रह न रखना तथा परिग्रह के उपर ममता न रखना ..... धर्म है ।
१६. इन्द्र अरिहंत परमात्माओं को नमस्कार करने के लिये ..... कहते हैं ।
१७. जिसे मोक्ष साधना करनी है, उसके लिये मार्ग पाना और ..... प्राप्त करना अत्यंत कठीन है ।
१८. ..... प्रभु को माँ ने विवाह के लिये बहुत समझाया फिर भी उनके जीवित रहते दीक्षा ले ली ।
१९. वन में घूमने से और रहने से वे ..... कहलाते हैं ।
२०. सच्ची ..... और सौम्य दृष्टि के बिना सच्चे को पहचानना बहुत मुश्किल है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. रामचंद्रजी के परम भक्त कौन थे ?
२. सोमवस ब्राम्हण की नगरी कौनसी ?
३. सौधर्मेन्द्र कौन से सिंहासन पर बिराजमान हैं ?
४. क्रोध के निमित्त में भी क्रोध न करना क्षमा धारण करना कौनसी क्षमा है ?
५. देवानंदा की कुक्षी में से गर्भ का हरण किसने किया ?
६. दिव्यता और भव्यता की प्राप्ति किससे होती है ?
७. सभी जीवो ने सभी स्थानो में अनंत जन्म मरण किये हैं, उसकी विचारण करना वह कौन सी भावना है ?
८. धर्म का दूत आया है, ऐसा किसने कहा ?
९. नरक के जीवों को विविध दुःख देने वाले कौन ?
१०. पंद्रहवा पाप स्थानक कौनसा ?
११. सोमवसु ब्राम्हण ने किसके पास दीक्षा ली ?
१२. शुद्धि पूर्वक पवित्र पंचाचार का पालन करना कौन सा चारित्र है ?
१३. मनोरम और सुमनस कौन से देव है ?
१४. गर्भ के प्रभाव से जयावली को क्या सुनने की इच्छा हुई ?
१५. शौच याने क्या ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. अण्णतं २) अभ्याख्यान ३) भवणा ४) भावणाओ ५) अंगीकयं ६) खायं ७) दुविहं ८) बंभय ९) धम्मस्य १०) बीअं
११. खंती १२) मृषावाद १३) बोही १४) आचरई १५) विकला १६) भंते १७) जोइसिया १८) सुविहिआ १९) सावज्जं
२०. आसव

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) लज्जा	१) वैश्रमण	६) यशोधराचरित्र	६) सद्‌गुणों की माता
२) विशुद्ध	२) नक्षत्र	७) पतंग	७) भामंडलसे विभुषित
३) सूर्य	३) वाणव्यंतर देव	८) उत्तरा फाल्गुनी	८) आहार
४) कुबेर	४) देवता	९) चार लाख	९) लोभकषाय का अभाव
५) निर्लोभता	५) पापस्थानक	१०) मिथ्यात्व शल्य	१०) कथा

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. साधु का सयंम कितने प्रकार का है ?
२. वासुदेव की माता कितने स्वप्न देखकर जागती है ?
३. अपनी पृथ्वी से कितने योजन उपर सूर्य का विमान है ?
४. अठारह पापस्थान के कितने भांगो से दोष लगता है ?
५. नारकी की कितने लाख जीवयोनि ?
६. स्वप्नशास्त्र में मध्यम स्वप्न कितने हैं ?
७. दस भवनपति के इन्द्र कितने ?
८. वाचनाचार्य कितने महिने का तप करते हैं ?
९. लोभ कितनावा पापस्थानक है ?
१०. दयालू श्रावक का कितनावा गुण है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. धर्म दूसरा कुछ भी नहीं सच्ची दया का शुद्ध आचरण है ।
२. कमंडल में तुम बिल्ली जैसी दिखती हो ।
३. सोम नाम के गुरु को अभय और सुयश नाम के शिष्य थे ।
४. दूसरों के द्रव्य से या भाव से दया करना वह द्रव्य दया है ।
५. भवनपति देव दिखने में कुमार जैसे होने से इनके नाम के पश्चात कुमार शब्द जोडा जाता है ।
६. श्री ऋषभदेव की माता ने प्रथम स्वप्न में वृषभ देखा था ।
७. बाहर से सुंदर स्वरुपवान दिखती काया अंदर से मलमूत्र से भरी हुई है ।
८. लांतक लोकांतिक देव है ।
९. मार्दव सरलता और निष्कपटतामय है ।
१०. परिवार के सभी सदस्य साथ में टी.वी. पर धार्मिक फिल्म देखते हैं ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. मेरा यह कर्तव्य माता के सुख के बदले दुःखरुप बन गया ।
२. हीरा मुख से ना कहे लाख हमारा मोल ।
३. हे भगवंत ! उस संबधी (पूर्व में किये हुए) पाप से मैं वापिस फिरता हूँ ।
४. हे नाथ आपको ठीक लगे वह करो, मैं उसमें विघ्न नहीं डालूंगी ।
५. सम्यगदर्शन अति दुर्लभ है, यह मिले तो मानव भव सफल है ।
६. जीवन में धर्मरत्न को पाने के लिये दयाभाव का प्रगटीकरण अत्यन्त आवश्यक है ।
७. कैसी अजब गजब शक्ति है, मध्यस्थ सौम्य दृष्टि में, कब मिलेगी हमें यह शक्ति (दृष्टि) ।
८. अनचाही वस्तु पर तिरस्कार करना ।
९. दूसरे प्रकार के किल्बिषिक तीसरे देवलोक के नीचे रहते है ।
१०. दक्षिण दिशा का सुंगधी और शीतल पवन मंद मंद रीत से भूमि को स्पर्श कर रहा था ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. माता पिता का अभिलाष- पुत्र का नमा वर्धमान । २) अठारह पाप स्थानक के दोष समझाओ ।
३. भवनपति के देव । ४) यथाख्यात चारित्र
५. कठोरता और क्रुरता की अनादि की दोस्ती की अंत ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com